शिक्षक - शशि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 25-11-2020, वर्ग - BA-III

प्रश्न :- "लेनिन ने नई आर्थिक नीति की व्याख्या दो कदम आगे बढ़ने के लिए एक कदम पीछे हटने के ~~लिए~~ रूप में की।" क्या आप सहमत हैं? इस नीति का परित्याग क्यों किया गया?

"Lenin described the New Economic policy at a step backward to take two steps forward" do you agree? Why was it abandoned?

उत्तर :- "सामरिक साम्यवाद के पश्चात रूस में 'नवीन आर्थिक नीति' की प्रयोज्यता का विभिन्न विद्वानों ने अलग अलग दृष्टिकोण से विश्लेषण किया। नवीन आर्थिक नीति के परिणामस्वरूप रूस में किस प्रकार की व्यवस्था विकसित हुई, वह मिश्रित अर्थव्यवस्था थी। इसमें पूँजीवादी एवं समाजवादी तत्वों का सह-अस्तित्व विद्यमान था अर्थव्यवस्था में पूँजीवादी तत्वों को स्थान देने के लिए सोवियत सरकार ने छोटे-छोटे अर्द्धऔद्योगिक उपक्रमों का अराष्ट्रीयकरण (De-nationalization) किया। कृषि एवं उद्योग के बीच उचित विनिमय व्यवस्था स्थापित की तथा

व्यापार (विशेष रूप से फुटकर व्यापार) के क्षेत्र में निजी उद्यमियों को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की। इसे वामपन्थियों ने लेनिन का पूँजीवाद के समक्ष घुटने टेकना या साम्यवाद की ओर से पीछे मुड़ना स्वीकार किया। तत्कालीन विदेशी बुर्जुआ ने नवीन आर्थिक नीति की प्रयोज्यता को साम्यवादी नीति की विफलता का परिचायक, पहले से विजित स्थिति का परित्याग और अन्ततोगत्वा पूँजीवाद व्यवस्था की पुनर्स्थापना स्वीकार किया। इस नीति के परिणामस्वरूप रूसी समुदाय के कुछ वर्गों में भी आशंका एवं निराशावाद ने जन्म लिया। इन वर्गों ने नीति को 'विरोधी शक्तियों के समक्ष झुकाव' अंगीकार किया। विंस्टन चर्चिल (Winston Churchill) ने नई आर्थिक नीति को सामरिक साम्यवाद की नीति का प्रत्याख्यान स्वीकार किया।

मौरिस डॉब (Maurice Dobb) के अनुसार, 'नवीन आर्थिक नीति अपनायी गई अर्थव्यवस्था में ऐसी कोई आकस्मिक नवीनता

नहीं थी, जिसका रातो रात अनुसंधान कर लिया गया हो या जो प्राचीन व्यवस्था पर प्रत्यक्ष प्रहार की विफलता द्वारा थोप दी गई हो।" वस्तुतः गृह-युद्ध से पूर्व सोवियत रूस में राजकीय पूँजीवाद की नीति जो प्रचलित थी, गृहयुद्ध के पश्चात वही नीति पुनः अपना ली गई थी। गृह-युद्ध के समय सोवियत रूस साम्यवाद की दिशा में अत्यधिक बहुत आगे बढ़ गया था। अतः जब गृह-युद्ध के पश्चात सोवियत सरकार ने सामरिक साम्यवाद की नीति का परित्याग करते हुए पुनः राजकीय पूँजीवाद अपनाई तब रूसी विदेशी बुर्जुआ वर्ग को तथा रूस के वामपंथियों को भारी भारी आश्चर्य हुआ। उन्होंने समझा की लेनिन ने साम्यवाद को तिलांजलि देकर पूँजीवादी शक्तियों के समक्ष घुटने टेक दिए हैं। परन्तु वास्तविक स्थिति यह नहीं थी। नई आर्थिक नीति की प्रयोजना द्वारा सोवियत सरकार पूँजीवादी (विरोधी) शक्तियों के समक्ष नतमस्तक नहीं हुई थी।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंगों (बैंकिंग प्रणाली, विदेशी व्यापार, खनिज-संसाधन, विशालस्तरीय उद्योग, विद्युत-उत्पादन एवं परिवहन प्रणाली पर उसका प्रभुत्व अब भी विद्यमान था, भारी, आधारभूत एवं सुरक्षा उद्योग केन्द्रीय नियंत्रण के अन्तर्गत थे। निःसंदेह औद्योगिक क्षेत्र में पर्याप्त विकेन्द्रीकरण एवं राष्ट्रीयकरण हुआ था; किन्तु विकेन्द्रीत एवं अराष्ट्रीयकृत उद्योग को पुनः पूंजीपतियों के नियंत्रण में नहीं दिया था। विकेन्द्रित उद्योग प्रन्यासों के नियंत्रण में रखे गए थे, जिनके संचालक बोर्ड 'सर्वोच्च आर्थिक परिषद' द्वारा अप्रैल 1923 में जारी आज्ञप्ति द्वारा निर्धारित शर्तों के अधीन नियुक्त किए जाते हैं। अराष्ट्रीयकरण की नीति कारखानों के बजाय वर्कशॉप के सम्बन्ध में अपनाई गई थी तथा अराष्ट्रीयकृत संगठन भी सहकारी समितियों को पट्टे पर दिए गए थे। अतः नवीन आर्थिक नीति की उपयोगिता को

पूँजीवादी शक्तियों के समक्ष पूर्णतः नतमस्तक
होना नहीं माना जा सकता।